आसोप के परम्परागत जल स्त्रोतः ऐतिहासिक तालाबों के विशेष संदर्भ में

*डॉ. भरत देवड़ा

सारांशः

जोधपुर ग्रामीण के भोपालगढ़ तहसील में स्थित गांव आसोप अपने परंपरागत जल स्रोतों के लिए जाना जाता है। इसकी सबसे महत्वपूर्ण बात यह है की यहां के तालाब आज भी पेयजल के लिए उपयोग किए जाते हैं। तालाबों के प्रबंधन के लिए ग्राम वासियों ने विशेष व्यवस्था कर रखी है। जिसके अंतर्गत ओरण भूमि में मल मूत्र त्याग करने, गंदगी फैलाने, वहां से पेड़ काटने पर पूर्ण प्रतिबंध है। ये जल स्रोत वर्षा जल संग्रहण के साधन है। इन जल स्रोतों के किनारे अनेक छतरियां, मंदिर, देवालिया स्थित है। आसोप की यह जल स्रोत जैव विविधता के भी अच्छे उदाहरण है। सर्दियों में यहां पर विदेशी पक्षी कुरजा का डेरा डाला हुआ रहता है। पशु – पक्षी जैसे हिरण, नीलगाय, खरगोश, तितर, मोर, कबूतर आदि प्रमुख हैं। इनकी ओरण भूमि में खींप, कैर, बैर, खेजड़ी, कुमटिया आदि अनेक पेड़ – पौधें पाएं जाते हैं। तालाब के अलावा नाडे – नाडिया, कुएं आदि प्रमुख जल स्रोत भी हैं। आसोप के तालाबों की स्थिति को देखकर यह कहा जा सकता है कि यहां के तालाब आज भी खरे हैं।

संकेताक्षर : आसोप, परंपरागत जल स्रोत, जल संरक्षण, तालाब, नाडे – नाडिया, कुएं।

प्राचीन समय में मारवाड़ रियासत का एक महत्वपूर्ण व वरिष्ठ ठिकाना, ध्रुव नगरी व शोप नगरी जैसे उपनामों से चर्चित आसोप वर्तमान में भोपालगढ़ तहसील का सबसे बड़ा गांव है। यह जोधपुर जिले से 94 किलोमीटर दूर जिले की अंतिम सीमा पर स्थित है। इससे आगे नागौर की सीमा शुरू हो जाती है। आसोप ठिकाना मारवाड़ जोधपुर राज्य के अन्तर्गत है। तहसील से आसोप की दूरी 20 किलोमीटर है। कस्बे से 21 किलोमीटर की ,दूरी पर पूर्व की ओर गोटन रेल्वे स्टेशन स्थित है। इस समय यह ठिकाना कूंपावत राठौड़ों के अधिकार में था। आसोप का इतिहास वीर रस का इतिहास है। इस ठिकाणे की नींव जोधपुर के राव रणमल के प्रपौत्र, अखैराज के पौत्र, महराज के पुत्र वीरवर कूंपा से लगी है। जिस कूंपा और जैता ने सुमेल की समर भूमि मे मातृ भूमि की बलि वेदी पर आत्म बलि देकर अपने नामों को मारवाड़ के इतिहास में अमर कर दिया। जैसे कूंपा महराज का पुत्र था, वैसे जैता पंचायण का पूत्र था। महराज और पंचायण दोनों अखेराज के पुत्र थे। अखेराज राव रणमल के 27 पुत्रों में से ज्येष्ठ था। लेकिन अपने पिता रणमल की इच्छा के अनुसार उसने स्वंय अपने हाथ से छोटे भाई जोधा के राज तिलक कर उसे मंडोर का स्वामी बना दिया और अपने लिए बगड़ी को विजय कर नया राज्य नियत किया। कूंपा से कूम्पावत शाखा चली और जैता से जैतावत। कूंपावत शाखा के वंशजों के अधीन मारवाड़ मे 11 ठिकाने थे जिसमें पाटवी और सबसे अधिक पट्टा आसोप का था।

राव जोधा से पांचवी पीढ़ी राव मालदेव बड़े ही वीर और प्रतापी राजा हुए जिनके पास 80 हजार सवार और 9 हजार गांव थे। उनके राज्य की सीमाएं विस्तृत थी। इनके अधिकार में 52 परगने और 84 गढ़ थे। इस समस्त राज्य विस्तार का श्रेय कूंपा और जैता को दिया जाता है। इनके भय से भयभीत होकर जैसलमेर रावल और आमेर के कछवाहो ने अपनी कन्याएं जोधपुर के राजा मालदेव को ब्याह कर अपने राज्यों की रक्षा की।[1]

इन राठौड़ रण विजयी वीरों ने राव मालदेव के आग्रह पर बनवीर को चितौड़ से निकाल कर उदयसिंह को राजसिंहासन पर आसीन किया। इन्होंने अपने पराक्रम से रावजी के जोधपुर और सोजत इन दो परगनों के छोटे से राज्य को विशाल साम्राज्य में परिवर्तित कर दिया। इनमें से राठौड़ कंपा महापराक्रमी, साहसी व रण विजयी पुरूष था। इसनें अपना समस्त जीवन स्वामी की सेवा में समर्पित कर रखा था। उसी कुंपा के वंशजों ने आसोप ठिकाने पर पीढ़ियों तक राज किया। आसोप ठिकाना कुरब कायदे में मारवाड़ का प्रथम श्रेणी का ठिकाना था।

ऐसी किंवदती है कि पहले यहां 'शोप' नाम का स्थान था। पूर्व समय में किसी अनजान पुरूष ने आकर यहां के निवासी से पूछा की 'शोप' किसी है तो उसने कहा कि आ शोप है तो उसी दिन से इसका नाम आशोप हो गया जिसका अपभ्रंष 'आसोप है। यह किंवदती कितनी सच है यह तो नहीं कहा जा सकता लेकिन इससे इसकी प्राचीनता का भान होता है। आसोप गांव के नाम से ही दाहिमा ब्राह्ममों की आसोपा खांप निकली है जो आसोप की प्राचीनता की घोतक है।[2]

इसके अतिरिक्त आधुनिक आसोप नगर से पश्चिम दिशा में एक पुरातन मंदिर है उसके चारों ओर बाहर की तरफ भित्ति में दशावतार के चित्र खुदे हुए है। उस बेवालय की रचना शिल्प देखने से विक्रमी अष्टम अथवा नवम शताब्दी में हुई हो ऐसा जाना जाता है। इस मंदिर के समीप एक स्तम्भ खड़ा है। उस पर वि.सं. 1012 का शिलालेख खुदा हुआ है। इससे अनुमान लगता है कि यहां पूर्व काल में नगर बसा हुआ था। क्योकि देवालय प्रायः नगर में होता है। आधुनिक आसोप का निर्माण शायद तेरहवीं या चौदहवीं शताब्दी में हुआ हो। आसोप नगर के बाजार में एक जगदीश मंदिर है उसमें प्रतिष्ठित ठाकुर जी की चरण चौकी में वि.सं. 1383 का शिलालेख खुदा हुआ हैं। उसमें मूर्ति स्थापित करने वाले का नाम असपाल लिखा है, उसी के नाम से शायद 'आसोप' नाम प्रसिद्ध हुआ हो।[3]

वर्तमान में कस्बे की आबादी उतर में नानोलाई तालाब से दक्षिण में बारनी रोड़ तक व पूर्व में नौसर तालाब से पश्चिम में बिजली घर तक फैली हुई है। आबादी लम्बाई व चौड़ाई की दृष्टि से तीन–तीन किलोमीटर तक फैली हुई है। कस्बे के चारों दिशाओं में चार तालाब नानोलाई, चांचोलाई, नौसर व महादेव है। पश्चिम की ओर स्थित माता का थान नामक तालाब से सटा हुआ देवी का एक अतिप्राचीन मंदिर बना हुआ है जिसकी रचना शिल्प को देखने से 8 वीं या 9 वीं शताब्दी का बना हुआ प्रतीत होता है। कस्बे में प्राचीन व कलात्मक मंदिरों की भरमार है। एक तरफ प्राचीन मंदिरों की भव्यता तो दूसरी तरफ कस्बे की शान का प्रतीक, सैकड़ों वर्षों के गौरवशाली इतिहास की झलक बिखेरता, स्थापत्य कला का उत्कृष्ट व नायाब नमुना मांडण गढ़ तो एक तरफ राजाओं महाराजाओं के जीवन के साक्षात नमूने के रूप में खड़ी नौसर की ऐतिहासिक छतरियां खुद–ब–खुद आसोप की महानता की कहानी बयान कर रही है।

पानी की प्रचुरता के लिए आसोप की ग्रामीण क्षेत्रों में विशेष ख्याति थी। मीठे पानी के लिए आसोप दूर–दूर तक मशहूर था। कहा जाता है कि पानी की प्रचुरता के कारण ही दूर गावों के लोग भी अपनी बेटियों की शादी आसोप में करने की ख्वाहिश रखते थे ताकि अमृत रूपी जल से सरोबार इस गांव में उनकी बेटियों को पानी के लिए कोसों दूर जाना नहीं पड़े। इस संबंध में कहा जाता है कि प्राचीन समय में में औरतें ईश्वर से आराधना करती थी कि, *"हे भगवान! चिड़ी–कमेड़ी बणावे तो भी आसोप री बणाजे"*।[4] गांव के चारों ओर पांच तालाब खुदे हुए है जो पेयजल के मुख्य स्त्रोत थे। इनमें वर्तमान में भी वर्ष भर अमृत तुल्य नीर भरा रहता है। वर्तमान समय में भी गांव में पानी की अच्छी सुविधा है। पेयजल के लिए सरकार की ओर से ट्यूबवैल संचालित हो रहे है। भूमिगत पाइप लाइन से हर घर की चौखट तक भूजल विभाग पानी पहुंचा रहा है। लेकिन अब भूमिगत जल में फ्लोराइड की मात्रा दिनों–दिन बढ़ रही है जिससे लोग पुनः तालाबों का पानी पेयजल हेतु काम में ले रहे है।

ऐतिहासिक एवं पवित्र सरोवर

गांव के पूर्वजों ने पानी के महत्व का किस दृष्टि से आंकलन किया, इसका प्रमाण कस्बे के चारों ओर खुदे हुए तालाब है। इन तालाबों से सदियों तक ग्रामीणों व पशु–पक्षियों ने अपनी प्यास बुझाई और आज भी इनका महत्व बरकरार है।

पुराने जमाने में पानी के भूमिगत स्त्रोतों का विकास न हो पाने से लोगों को तालाबों पर ही निर्भर रहना पड़ता था। इसी दृष्टि से आसोप में नौसर, नानोलाई, चांचोलाई, महादेव व माता का थान के नाम से पांच तालाब खुदे हुए है। ये तालाब भी अतिप्राचीन है।

पानी की कीमत उसने जानी,
जिसने ढोया सिर पर पानी।

नौसर तालाब

आसोप के तालाबों में से नौसर तालाब का विशेष ऐतिहासिक महत्व रहा है। इस तालाब की पाळ पर राजा–महाराजाओं की स्मृति में कलात्मक व अनूठी छतरियां निर्मित है जो अपने आप में सदियों पुराना रोचक इतिहास समेटे हुए है। कई बार क्षेत्र में भंयकर अकाल पड़े। लोगों को रोजगार के लिए गांव छोड़कर मालवा प्रदेश जाना पड़ा। उस विकट समय में भी इस तालाब का पानी नहीं सूखा। दूर–दूर से ग्रामीण बैलगाड़ियां लेकर पानी हेतू यहां पहुंचते थे। तालाब की पाळ पर गोपाल मंदिर बना हुआ है। तालाब पर बनी एक छतरी की गुफा में चार वर्ष तक खेड़ापा राम–धाम के आदी आचार्य संत रामदास जी ने तपस्या की। देवझूलनी ग्यारस पर कस्बे के सभी मंदिरों की रेवाड़ियां झूलुस के साथ यहां लाई जाती है वहीं अनन्त चतुदर्शी को हजारों लोगों की उपस्थिति में गणपति प्रतिमाओं को इस तालाब में विसर्जित किया जाता है। इस तालाब का धार्मिक महत्व आज भी कायम है। तालाब के चारों ओर पत्थर के खुरों से निर्मित तीन घाट है। तालाब के रख–रखाव हेतू 114 बीघा 18 बिस्वा जमीन आंवटित है। नौसर तालाब के बारे में एक दोहा प्रसिद्ध है[5]–

"आसाणा इन्द्रापुरी नौसर गंगा नीर।
पणिहारियां पाणी भरे ओढ़े चंगा चीर" ।।

चांचोलाई तालाब

नौसर के पास ही चांचोलाई तालाब स्थित है। इस तालाब की पाळ पर नृसिंह भगवान का मंदिर है। इस मंदिर में प्रतिवर्ष नृसिंह चतुदर्शी पर विशाल मेला भरता है। चांचोलाई तालाब के रख–रखाव के लिए 22 बीघा 66 बिस्वा जमीन आंवटित है।[6]

नानोलाई तालाब

गांव के अंदर उत्तर दिशा में नानोलाई तालाब स्थित है। यह तालाब भी प्राचीन समय में खुदा हुआ है। इसका पानी वर्तमान मे पीने के काम आ रहा है। इस तालाब की पाळ पर कृष्ण मंदिर प अंगोर पर कबीर आश्रम निर्मित है। पाळ से सटी हुई भोला बाबा की कुटिया है जहां रहकर बाबा ने वर्षों तक तपस्या की। इसके पास ही गोगाजी का थान है। यहां प्रतिवर्ष गोगा नवमी को मेला भरता है। नानोलाई तालाब के नाम से 57 बीघा 7 बिस्वा जमीन आंवटित है।[7]

महादेव तालाब

गांव की पश्चिम दिशा में महादेव तालाब स्थित है। इस तालाब की पाळ पर एक मंदिर बना है वहीं तालाब के अंदर एक छोटा सा शिव मंदिर बना है मंदिर में एक गुफा है। शिवरात्रि पर श्रृद्धालु यहां पूजा–अर्चना के लिए आते है। महादेव तालाब के नाम 43 बीघा 18 बिस्वा जमीन है।

महादेव तालाब के आगे गांव की सरहद पर 'माता का धान' नाम से एक तालाब है। इस तालाब के पास एक अति प्राचीन देवी मंदिर है। मंदिर की शिल्प रचना से यह 8 वीं या 9 वीं सदी में बना प्रतीत हो रहा है। मंदिर के गृभ गृह के एक स्तम्भ पर वि.सं. 1012 व सामने के एक स्तम्भ पर वि.सं. 1618 खुदा हुआ है।[8]

पिलाणा तालाब

कस्बे से 3 किलोमीटर दूर स्थित **पिलाणा** के नाम से एक तालाब स्थित है जो अतिप्राचीन है। तालाब पर महादेवजी का एक प्राचीन मंदिर बना हुआ है। कहा जाता है कि पहले आसोप यहां बसा हुआ था। इस तथ्य के पीछे सच्चाई हो सकती है क्योंकि मंदिर प्रायः गांव में ही होते थे। निर्जन व वीरान जगहों पर मंदिर का निर्माण नहीं होता था। यहां लोक देव चामकाजी का स्थल भी है जहां पत्थर की विशाल प्रतिमा रखी है। यहां प्रतिवर्ष इस लोकदेवता के नाम से मेला भरता है। वि. सं. 1974 में प्लेग की महामारी फैली। इस बीमारी की चपेट में आकर लोग मरने लगे। ठाकुर चैनसिंह ने इस समय गढ़ खाली कर सम्पूर्ण राज–परिवार सहित 'पीलाणा तालाब' पर डेरा डाला था। उनके साथ पूरा गांव खाली हो गया और कुछ समय के लिए सभी ग्रामीण 'पीलाणा तालाब पर ही रहे।[9]

चामकाजी–तालाब

चामकाजी–तालाब के पास ”श्री भैरवनाथ जी” की सुन्दर मूर्ति स्थापित है। इस लोक देवता को ग्रामीण 'चामकाजी' के नाम से भी पुकारते है। चामकाजी शब्द ”चौमुख” का अपभ्रंश है। यहां पर लोग बच्चों का झडुला चढ़ाने व नवविवाहितों की जात देने के लिए भी आते है।

प्राचीन समय में ये तालाब ग्रामीणों के पेयजल के मुख्य व एक मात्र आधार थे। वर्तमान समय में पेयजल की सरकारी व्यवस्था के चलते पाईप लाईन के जरीए ट्यूबवेलों का पानी घरों की दहलीज तक पहुंच रहा है। इस सुविधा के चलते ग्रामीण इन प्राकृतिक सरोवरों को भूल रहे थे। लेकिन अब भूमिगत जल में फ्लोराइड की मात्रा दिनों–दिन बढ़ रही है जिससे लोग पुनः तालाबों का पानी पेयजल हेतु काम में ले रहे है।

गांव की कृषि भूमि में स्थित प्रमुख नाडा एवं नाडियां

आसोप की कृषि भूमि पर पूर्वजों ने पेयजल के लिए कई नाडो (लघु तालाब) का निर्माण करवाया। जो आज भी अस्तित्व में है। यह नाडे वर्षा ऋतु में किसानों के साथ–साथ पशु–पक्षियों व अन्य जीव–जंतुओं की प्यास बुझाते है। इन नाडो की आस–पास के खेतों के लोग सार–सम्भाल करते है। वर्षा ऋतु में यह नाडे लबालब भर जाते है। इनमें 6–7 माह तक पानी भरा रहता है। वर्तमान में 40 से भी ज्यादा नाडे अस्तित्व में है[10]–

उतर दिशा– झांडिया, ढेन्डी, सिंसिया, देवळयि, तिपरन्डा, सुनियापा, नवा नाडा, कोसिया, जोड़किया, मड़ला, कैमरी, कड़ाई, जेन्डो।

दक्षिण दिशा– कचोळयि, गुन्दळा, धाइन्डा, बेड़ी नाडी, बाग नाडा, सांवत नाडा, भिजुन्डी, मोचिन्डो, राजुन्डो, मानोळाई।

पूर्व दिशा– रोज नाडा, परबुन्डियो, भक्तियों, गिद नाडा, करमा नाडो, हज नाडीयो, सेणी नाडी।

पश्चिम दिशा– पाउन्डो, ईन्डो, हरिन्डो, पिलाणो, छिपन्डी, खाति नाडो. केरियो, हरकली, गोइन्डो।

प्रमुख कुएं

तालाब, नाडा, नाडियों के अलावा आसोप गांव में ठिकाणे के समय से भागड़ा (चौतिणा), खारिया, दूदिया व राजसागर नाम से कुएं खुदे हुए थे। वर्तमान में भागड़े के अलावा सभी बन्द पड़े है। भागड़ा कुएं को चौतिणां भी कहा जाता है। इस कुएं को ठाकुर नाहरसिंहजी ने खुदवाया था। इस कुएं पर पानी निकालने हेतू चार चरस चलते थे। इसलिए इसे चौतिणा कहा जाता है। प्राचीन समय में तालाबों में पानी नहीं होने पर महिलाएं गांव से 3 कि.मी. दूर स्थित चौतिणा कुएं से पानी लाती थी। इस संबंध में एक दौहा प्रचलित है–

”मायड़ भेजी रंगी–चंगी, सासु नहीं जांणी।
काजल–टीकी भूलगी, चौतिणां धारों पांणी।।”[11]

आसोप के तालाबों के किनारे प्रमुख धार्मिक स्थल

धार्मिक त्योहारों में तालाब एवं नाडा–नाडियां में स्नान करना पुण्यकारी माना जाता है। प्राचीन मंदिरों के पास अक्सर तालाब होते हैं, जिनका प्रयोग धार्मिक अनुष्ठानों में जल लेने के लिए होता है। मृतात्माओं की शांति के लिए जल का प्रयोग आवश्यक होता है, जिसके लिए तालाबों का उपयोग होता है। जोधपुर ग्रामीण के अधिकांश तालाबों एवं नाडों–नाडियों के किनारे शमशान घाट बने हुए है। कुछ तालाब विशेष देवी–देवताओं से जुड़े होते हैं और वहाँ विशेष पूजन होते हैं। थार मरूस्थल में भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की एकादश को जलझूलनी को अधिकांश तालाबों एवं नाडों–नाडियों के किनारे मेले भरते है तथा मंदिरों से देवी–देवताओं की मूर्तियां निकालकर तालाबों में ले जाकर नहलाते है।

गाँवों में तालाब एवं नाडा–नाडियां लोगों के मिलने–जुलने, बात करने और सामूहिक गतिविधियों का स्थान होते थे। महिलाएँ जब तालाब पर पानी भरने जाती थीं, तो लोकगीत गाती थीं, जिससे यह एक सांस्कृतिक केंद्र बन जाता था। कई तालाबों एवं नाडों–नाडियों के किनारे मेले, भजन–कीर्तन और सामूहिक उत्सव आयोजित किए जाते थे।

थार मरूस्थल में भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की एकादश को जलझूलनी को अधिकांश तालाबों के किनारे मेले भरते है। कई तालाबों के किनारे सुंदर घाट, छतरियाँ और मंडप बनाए जाते थे जो स्थापत्य कला के अद्‌भुत उदाहरण हैं। जोधपुर ग्रामीण में तालाबों एवं नाडों–नाडियों के किनारें अनेक मंदिर, छतरियाँ तथा सती स्मारक बने हुए है।

श्री राधे–कृष्ण मंदिर (पिलाणा तालाब): आसोप नगर के पश्चिम में 3 कि.मी. की दूरी पर जोधपुर जाने वाली सड़क से उत्तर दिशा की ओर स्वच्छ तलाई है जिसे 'पिलाणा नाडा' कहते है। इस तालाब पर "श्री राधे–कृष्ण" का एक प्राचीन मंदिर बना हुआ है। यह मंदिर काफी पुराना है। मंदिर में ठाकुर राजसिंह की धाय माता की छतरी बनी हुई है।[12]

नौसर तालाब की ऐतिहासिक छतरियां: कस्बे का नौसर तालाब शुरू से अपने आप में ऐतिहासिक रहा है। तालाब की पाल पर भगवान श्री कृष्ण का गोपाल मंदिर बना हुआ है। यह तालाब शुरू से ही राज परिवार से जुड़ा हुआ था। आसोप ठिकाने के राव मांडण से लेकर ठाकुर फतैसिंह तक जितने भी राजा–महाराजा इस रियासत में हुए, उनकी याद को चिर स्थायी रखने के लिए तालाब की पाल पर राज परिवार की ओर से उत्कृष्ट छतरियों का निर्माण कराया गया। इस तालाब पर 20–25 छतरियां बनी हुई है जो स्थापत्य कला का उत्कृष्ट नमूना है। बड़ी बारीकी से पत्थरों को तरास कर इनका निर्माण इस ढंग से किया गया है कि इन्हें देखते ही एक बारगी हर कोई इतिहास के वैभव में खो जाता है। पत्थरों पर की गई बारीक गड़ाई, बैल–बूंटे, चित्र, छज्जों का आकार, चारों ओर लगाई गई कलात्मक रेलिंग, तरासे गए स्त्भ व छत पर लगे पत्थरों पर उकेरी गई आकृतियां अनायास ही दर्शकों का मन मोह लेती है। छतरियों के नीचे बने चबुतरों पर संगमरमर (मकराना) पत्थर के शिलालेख लगे हुए है जिन पर संबंधित राजा की देहावसान तिथि व उसके जीवन का उल्लेख है।

जब तालाब पानी से लबालब भरा हुआ हो तो इन छतरियों का पानी में दिखने वाला प्रतिबिम्ब बड़ा ही मन–मोहक लगता है। लेकिन राजशाही शासन के पतन के बाद राज परिवार ने भी इन ऐतिहासिक छतरियों को भुला दिया। आज ये कलात्मक छतरियां देख–रेख के अभाव में जीर्ण–शीर्ण हो रही है। इनमें से कई छतरियां गिरकर मलबे के ढेर में बदल गई है तो कई गिरने के कगार पर पहुंच चुकी है।[13]

नौसर व नानोलाई तालाब के किनारे संतो का बसेरा: आसोप सदा से ही एक धार्मिक स्थल रहा है। एक तरफ जहां यह गांव वीरों के कारनामों से सुशोभित हुआ तो दूसरी तरफ संत–महात्माओं के अध्यात्म रस से भी सदा सरोबार रहा। खेड़ापा राम धाम के आदि आचार्य रामदासजी महाराज ने चार वर्षों तक अपनी तपस्या से धरा को पावन किया तो रेण धाम के संत गुलाबदासजी महाराज ने वि.सं. 2021 में चातुर्मास का आयोजन कर गांव में भक्ति की गंगा बहाई। उस समय बागड़ा कुआ व माता का थान के इर्द–गिर्द क्षेत्र में भूत–पिशाचों का अस्तित्व था। रात को लोग यहां से निकलने से भी डरते थे। कई लोगों के साथ यहां अनहोनी व डरावनी घटनाएं घटी थी। कस्बे से आठ किलोमीटर दूर रडौद गांव स्थित है। इस गांव में भी उस समय भूत–प्रेतों का साया था। लोग रात को डरते थे। कई लोग भूत–प्रेतों के चुंगल में फंसे हुए थे। इसके चलते उस समय इस गांव को ही 'भूतां वाळी रड़ौद कहा जाता था। अपने चातुर्मास प्रवास के दौरान गुलाबदासजी ने इन स्थानों पर जाकर अपनी भक्ति व तपस्या के प्रभाव से भूत–प्रेतों के साये को खत्म कर दिया। तब से लोगों के साथ कभी यहां अनहोनी घटनाएं नहीं घटी।

संत किसनदासजी महाराज ने भी यहां रहकर तपस्या की। इस महात्मा ने आसोप में ही शरीर छोड़ने की इच्छा व्यक्त की थी। अपनी इच्छा के मुताबिक महाराज ने वि.सं. 1999 में चैत्र बदी चतुर्थी को आसोप ग्राम में शरीर छोड़ा। नौसर तालाब पर उनका अंतिम संस्कार किया गया जहां आज भी उनकी याद में घुमटी निर्मित है।

नानोलाई तालाब की अंगोर में उनकी स्मृति में एक कबीर आश्रम बनाया गया है जहां प्रतिवर्ष चैत्र बदी चतुर्थी को उनकी बरसी पर मेला भरता है। मेले में दूर–दराज से हजारों भक्त यहां पहुंचते है।

संत भोला बाबा ने नानोलाई तालाब की पाल पर बनी कुटिया पर वर्षों तक तपस्या की व लोगों को कई पर्चे दिए। आसोप में संतो का आगमन तो प्रायः होता ही रहता है। यहां संत अपना चातुर्मास प्रवास भी करते है। बाजार के पास एक जैन उपासरा बना है जहां कई जैन साधु व साध्वियां चातुर्मास करते है।

गणेश मंदिर (नानोलाई नाडी): नानोलाई नाडी के पास गणेश मंदिर स्थित है। यह मंदिर सैंकड़ों वर्ष पुराना है। पहले यहां काले पत्थर की विशाल गणेश प्रतिमा थी। वि.सं. 2032 में सेठ मुरलीधर, रामकंवार झंवर परिवार ने मंदिर

का पुनः निर्माण कराया। वर्तमान में यहां गणेश भगवान की संगमरमर की मुर्ति है। इस्वीं 2003 में ग्रामीणों ने इस मंदिर की मरम्मत करवाई। यह मंदिर पूरे गांव की आस्था का केन्द्र है।

ठाकुरजी का मन्दिर (नानोलाई नाडी): नानोलाई नाडी की पाल पर ठाकुरजी (कृष्ण भगवान) का मन्दिर स्थित है। अमृत रूपी जल से भरे इस सरोवर की पाल पर बना यह मन्दिर अति प्राचीन है। इस रमणिक स्थान पर बना यह मन्दिर उचित देख–रेख के अभाव में जीर्ण–शीर्ण हो चुका था। विक्रम संवत् 2056 में मोहनराम, मीकाराम, आशाराम बांता ने अपने दादा पुनाराम, दादी श्रीमती सोनी, पिता रामजीवण बांता व माता श्रीमती जानकीदेवी की याद में लाखों रूपये खर्च कर इस मंदिर का जिर्णोद्धार करवाया। मंदिर में मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा संवत् 2056 की आषाढ़ सुदी द्वितीया वार बुधवार दिनांक 14.7.1999 को रामस्नेही संत पांचारामजी महाराज के कर कमलों से सम्पन्न हुई।[14]

खेड़ापा रामस्नेही संत रामदासजी महाराज की तपोभूमि

नौसर तालाब की पाल संत रामदासजी महाराज की तपोभूमि मानी जाती है। विक्रम संवत 1783 फाल्गुन कृष्ण 13 (शिवरात्रि) त्रयोदर्शी के दिन बीकमकोर (जोधपुर) में अवतरित खेड़ापा के आदि आचार्य श्री रामदासजी महाराज ने विक्रम संवत 1817 से 1820 चार वर्ष नौसर तालाब पर भजन साधना कर यहां की भूमि को पवित्र किया। यहां पर वे ठाकुर राजसिंह की याद में बनी छतरी की गुफा में रहें। यह छतरी आज भी उतर दिशा वाले घाट के समीप बनी हुई है। विभिन्न रोगों से मुक्ति पाने के लिए आज भी लोग रामदासजी कि गुफा पर जाकर उन्हें याद करते है। रामदासजी महाराज को इसी गुफा में कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा विक्रम संवत 1820 के दिन साधना की पूर्णता " बाह्मी स्थिति" उपलब्ध हुई। स्वंय महाराज ने इसका उल्लेख करते हुए अपनी अनुभव वाणी में लिखा है–

"रामदास बीसो बरस, ता में कातीमास।
वा दिन छाड़ी नृग्गटी, किया बह्मा में वास।।"[15]

यहीं पर निवास करते हुए आपने बहुत सी अनुभव वाणी का सृजन किया था। आसोप में महाराज के आवास के बारे में कहा जाता है कि एक दिन वे अपने गुरू धाम सिंथल से भ्रमण करते हुए आसोप पहुंच गए। यहां पर उन्हें नौसर तालाब का वातावरण भजन साधना के लिए उपयुक्त लगा। नौसर तालाब से महाराज एक दिन ग्राम में आए। इस महापुरूष के ज्ञान व भक्ति से प्रभावित होकर ग्रामीणों ने उनसे आसोप में ही स्थाई निवास करने की प्रार्थना की। महाराजा ने ग्रामीणों की भावना का आदर करते हुए यहीं रहने की स्वीकृति दे दी। लेकिन महाराज ने नगर की अपेक्षा नौसर तालाब की पाल पर श्मसान में बनी एक नीरव व निर्जन छतरी को अपना आवास स्थल बनाया। यहां पर रहकर उन्होनें तपस्या की व भक्तों को उपदेश देते रहे। ग्रामीण महाराज के लिए भोजन प्रसाद लेकर जाते। महाराज मौसर, सूतक काल, प्रतिष्ठा व देवी–देवताओं की मनौती व भोग लगा भोजन ग्रहण नहीं करते थे।

एक दिन गांव में नागा जमात आई। जमात का महन्त बड़ा क्रोधी स्वभाव का था। कुछ निन्दक लोगों ने उसे महाराजा के खिलाफ भड़काया। महन्त बहकावे में आकर अपने चेले चांटियों के साथ रामदासजी के पास गया और मर्यादाहीन बातें करने लगा। महाराज ने उसे निर्गुण बह्म की साक्षी परक अनुभव वाणी सुनाई। आचार्य श्री का प्रत्युतर सुन महंत उनके चरणों में गिर पड़ा। रामदासजी से मारपीट करने व उन्हें अपमानित करने आया यह नागा महन्त उनके वचनों से प्रभावित होकर महाराज के सामने नतमस्तक हो गया और उनकी चरणवंदना करने लगा। तत्पश्चात् इस जमात ने उन्हें गुमराह करने वाले लोगों को दंडित किया और चले गए। रामदास जी के आसोप प्रवास के दौरान एक बार व्यतीपात योग का दिन आया। ('व्यतीपात' योग–पंचाग के पांच भागों में योग भाग का 17 वां योग है। कुल 27 योग होते है। व्यतीपात महाअशुभ योग है। इसमें दान पुण्य का वैसा ही महत्व है. जैसा कि ग्रहण या सूतक में होता है। अतः जानकार लोग इस योग में दान ग्रहण नहीं करते है।) इस दिन गांव का ठाकुर दान–पुण्य करने लगा।[16]

इस समय आसोप में ठाकुर कनीराम का शासन था। ठाकुर ने बस्ती में रहने वाले सभी शट्दर्शनी लोगों (जती, योगी, जैन, सन्यासी, ब्राह्मण) को गढ़ में बुलाया व सभी को एक–एक रूपया दान दिया। ठाकुर के आदेश से सब लोग आ गए लेकिन रामदासजी दान–पुण्य लेने नहीं आए। ठाकुर ने अपने कामदारों को रूपया देने के लिए महाराज के पास नौसर तालाब पर भेजा। कामदारों ने महाराज से रूपया लेने का आग्रह किया तो महाराज ने "पुन को लेवां कदै न कोई। हरि को लेवां हरि का होई।" कहकर रूपया लेने से मना कर दिया। कामदारों ने उन्हें अपने

ठाकुर का भय दिखाया लेकिन वे नहीं माने। कामदारों ने गढ़ में आकर राजा को सारी बात बता दी। यह बात सुन अभिमानी राजा ने कहा, " वे ऐसे स्वाभिमानी है तो मेरी बस्ती में क्यों बैठे हैं, अपने रामजी के पास चलें जाए।"[17]

यह बात सुनकर रामदासजी महाराज यहां से प्रस्थान कर खेड़ापा ग्राम चले गए जहां वे आजीवन रहे। महाराज रामदासजी का निर्वाण वि.सं. 1855 आषाढ़ कृष्ण 7 (सप्तमी) को हुआ।[18]

नौसर तालाब में आज भी पाल पर बनी छतरी के नीचे रामदासजी की तपोस्थली रही वह गुफा मौजूद है। यह गुफा ग्रामीणों की श्रद्धा व आस्था का केन्द्र बनी हुई है। खेड़ापा धाम के संत यहां प्रतिवर्ष राम जप का कार्यक्रम रखते है।

कुरजां की शरण स्थली आसोप

'कुरजां ऐ म्हारी मने भंवर दीजो मिलाय' जैसे मारवाड़ी गीतों में गाया जाने वाला विरहणी के प्रिय पंखेरू कुरजां को भी आसोप की जमीन अतिप्रिय रही है। सात समंदर पार हजारों मीलों का सफर तय कर दक्षिण अफ्रीका के जंगलों में पाया जाने वाला 'डेमोशियल क्रेन' के नाम से विख्यात यह मेहमान पक्षी प्रतिवर्ष सितम्बर माह (आसोज) में यहां पहुंचना शुरू हो जाता है। कस्बे के नौसर व नानोलाई तालाब की अंगोर पर यह पक्षी हजारों की तादाद में डेरा डालते है। दिन में यह पक्षी आस–पास के खेतों में दाना प्राप्त करने के लिए चला जाता है व रात के समय पुनः इन तालाबों पर आ जाता है। तालाब के किनारे किलोल करते इनके समूह व वातावरण में घुलती 'टर–टर' की आवाज तालाबों की सुंदरता में चार चांद लगा देती है। यहां कुरजां के डेरा डालने से नजारा बड़ा मनमोहक प्रतीत होता है। कुरजां का यहां आना लम्बे अरसे से जारी है लेकिन फिर भी यह पक्षी मानव से अपनी दूरी बनाए रखता है। शर्मीले मिजाज का यह पंखेरू सदा समूह में रहता है। दो माह तक यहां पड़ाव रखने के बाद कुरजां मारवाड़ के अन्य हिस्सों में चली जाती है। इनके उड़ान भर लेने के बाद यहां एक भी कुरजां पीछे नहीं रहती है। यह इनकी समूह में रहने की प्रवृति की धोतक है। वर्षों से यहां आ रहे इस पक्षी ने यहां कभी प्रजनन कार्य नहीं किया। कुरजां के समूह में कभी अव्यस्क पक्षी भी नजर नहीं आए। लेकिन विडम्बना है कि लम्बे अरसे से यहां आ रही कुरजां के लिए उनके पड़ाव स्थल को सुरक्षित व सुविधा युक्त शरणस्थली के रूप में विकसित नहीं किया जा सका है। इस ओर समुचित ध्यान दिया जाए तो कुरजां की शरणस्थली को पर्यटक स्थल में विकसित किया जा सकता है।[19]

वर्तमान में भी आसोप के तालाब पेयजल के लिए खरे है। इस गांव में नल से जलापूर्ति सुचारू रूप से नहीं होने के कारण वर्तमान में इस परम्परागत जल स्त्रोत की स्थिति बहुत अच्छी है, पेयजल को कोई दुषित नहीं करे अतः इसकी रखवाली एवं इसकी साफ सफाई के लिए ग्राम वासियों ने चौकीदार रख रखा है। इस तालाब में पानी पीने के लिए पशुओं को नहीं छोड़ा जाता है। इसमें से टैंकर भरकर पानी ले जा सकते है लेकिन उसकी कीमत देनी होती है। ग्रामवासी मटके एवं कलश में भरकर पानी ले जाते हैं। तालाब में नहाने और कपड़े धोने पर पूर्ण प्रतिबंध है। साथ ही तालाब क्षेत्र एवं इसकी ओरण भूमि में मल–मूत्र त्यागने पर पूर्ण प्रतिबंध है एवं यदि कोई गंदगी फैलाता है तो उस पर 500 रूपये का आर्थिक दण्ड लगाया जाता है। आसोप गांव के तालाबों को आदर्श तालाबों की श्रेणी में रखा जा सकता है।

***सहायक प्रोफेसर**
इतिहास विभाग
जय नारायण व्यास वि.वि. जोधपुर

संदर्भ ग्रन्थः–

1. पं. रामकरण आसोपा, *आसोप का इतिहास*, जोधपुर, पृ.सं. 1–2
2. वही।
3. वही।
4. व्यक्तिगत सर्वे पर आधारित जानकारी।
5. रामकिशोर सेंगवा, आसोप का इतिहास एवं लोक संस्कृति, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, 2008, पृ.सं. 102

6. वही।
7. वही।
8. वही, पृ.सं. 102–103
9. आसोप निवासी जितेन्द्र जी परिहार (उम्र 80 वर्ष) द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार
10. रामकिशोर सेंगवा, पूर्वोक्त, पृ.सं. 103
11. व्यक्तिगत सर्वे पर आधारित जानकारी।
12. वही।
13. रामकिशोर सेंगवा, पूर्वोक्त, पृ.सं. 103–104
14. वही, पृ.सं. 117
15. श्री पुरूषोतम दासजी महाराज (संपादक व टीकाकार), ग्रन्थ श्री परचीजी
16. वही।
17. श्री पुरूषोतम दासजी महाराज (संपादक व टीकाकार), राम धाम दर्शन
18. वही।
19. व्यक्तिगत सर्वे पर आधारित जानकारी।